Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय चित्रकला में डिजिटल क्रांति और परंपरा का संवाद 2020–2025

मनोज कुमार कलोशिया*

* शोधार्थी (दृश्य कला) मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.)) भारत

शोध सारांश – भारतीय चित्रकला की समृद्ध और प्राचीन परंपरा आज 21वीं सदी के डिजिटल युग में एक महत्वपूर्ण संक्रमण का सामना कर रही है। इस शोध आलेख का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे आधुनिक डिजिटल तकनीकें भारतीय चित्रकला की परंपरा को न केवल संरक्षित कर रही हैं, बल्कि उसे नई ऊंचाइयों तक ले जा रही हैं। कोविड–19 महामारी के बाद भारतीय कलाकारों ने टैबलेट, स्टाइलस, विभिन्न डिजिटल सॉफ्टवेयर और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का व्यापक उपयोग करके परंपरागत कला रूपों को पुनर्जीवित किया है। यह शोध पत्र विस्तार से विश्लेषण करता है कि कैसे डिजिटल माध्यम भारतीय कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने, आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करने और अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने का अवसर प्रदान कर रहा है।

भारतीय चित्रकला की परंपरागत नींव और ऐतिहासिक विकास – भारतीय चित्रकला की परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और सर्वाधिक विविध कला परंपराओं में से एक है। इसका इतिहास लगभग 30,000 वर्ष पुराना है, जो भीमबेटका की गुफाओं (मध्य प्रदेश) में पाए गए प्रागैतिहासिक चित्रों से प्रमाणित होता है। ये आदिम चित्र मानव जीवन की दैनंदिन गतिविधियों, शिकार के दृश्यों और धार्मिक अनुष्ठानों को चित्रित करते हैं, जिनमें लाल, सफेद, काले और पीले रंगों का प्रयोग किया गया है। ये चित्र न केवल कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे प्राचीन मानव सभ्यता की समझ के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। वैदिक काल (1500–500 ईसा पूर्व) में भारतीय चित्रकला मुख्यत: धार्मिक और अलंकारात्मक उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होती थी। गुप्त काल (320–550 ई.) को भारतीय कला का स्वर्णिम युग माना जाता है, और इस काल की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है, अजंता की गुफाओं में निर्मित भव्य भित्तिचित्र (**म्युरल्स**)। ये चित्र बुद्ध के जीवन, जातक कथाओं, बोधिसत्वों और वैष्णव देवताओं को चित्रित करते हैं। अजंता के भित्तिचित्रों में रंगों का गहराई से अध्ययन किया गया है, और विशेषज्ञों का मानना है कि लाल, हरे, पीले और नीले रंगों का निर्माण स्थानीय खनिजों से किया गया था। ये चित्र यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में भी शामिल हैं और वर्तमान समय में भारतीय चित्रकला की उत्कृष्टता का प्रतीक माने जाते हैं।

मुगल काल (16वीं–18वीं सदी) में भारतीय चित्रकला को फारसी और मध्य एशियाई कला परंपराओं का प्रभाव मिला, जिसके परिणामस्वरूप एक अद्वितीय लघु चित्रकला **(मिनिएचर पेंटिंग)** परंपरा विकसित हुई। अकबर, जहांगीर और शाहजहां के दरबारों में कला को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। मुगल चित्रकार अबुल हसन, मंसूर, बिसन दास और दूसरे कलाकारों ने दरबारी जीवन, शिकार के दृश्य, जानवरों और पक्षियों के अत्यंत महीन चित्र बनाए। ये चित्र रंगों की बारीकी, विषय–वस्तु की विविधता और तकनीकी कुशलता के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।

राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला शैलियां (17वीं–19वीं सदी) में विकसित हुईं और ये अपनी सजीवता, भावनात्मक अभिव्यक्ति और रंगों के सुंदर प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हैं। राजस्थान की मेवाड़ ,मारवाड़ ,हाड़ोती ,ढूंढाड़ चित्रशैलियों के साथ साथ पहाड़ी क्षेत्रों में विकसित ये शैलियाँ प्रमुखत: कृष्ण लीला, राधा–कृष्ण के प्रेम प्रसंग, राग–रागिनियों और शिकार के दृश्यों को चित्रित करती थीं। इन चित्रों में प्रकृति की सुंदरता, नायिकाओं की कोमलता और रंगों की विविधता का अद्भुत संयोजन दिखाई देता है।

19वीं सदी में जब भारत पर ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई, तो भारतीय कला पर पश्चिमी प्रभाव पड़ा। इसी समय आधुनिक भारतीय चित्रकला के जनक राजा रविवर्मा (1848–1906) का उदय हुआ। **रविवर्मा** ने यूरोपीय तकनीकों को भारतीय विषयों के साथ मिलाया। उनके चित्र विशेषकर देवी–देवताओं और भारतीय पौराणिक पात्रों के चित्र, भारतीय जनमानस को गहरे स्तर पर प्रभावित करते हैं। रविवर्मा की कला को **'लिथोग्राफी'** प्रक्रिया के द्वारा मुद्रित किया गया, जिससे यह आम भारतीय घरों तक पहुंच गई। उनकी **'शकुंतला', 'नलदमयंती'** और अन्य रचनाएं आज भी भारतीय कला संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

20वीं सदी के आरंभ में बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना अवनींद्रनाथ ठाकुर द्वारा की गई। इस स्कूल ने पश्चिमी यथार्थवाद और अकादमिक परंपराओं के विरुद्ध भारतीय कला की परंपरागत शैलियों को पुन: प्रतिष्ठित किया। अवनींद्रनाथ ठाकुर, शोभा रानी, एम.एफ. हुसैन, राम कुमार, एफ.एन. सूजा, राजा रविवर्मा और अन्य कलाकारों ने 20वीं सदी की आधुनिक भारतीय चित्रकला को परिभाषित किया। ये कलाकार अपनी कला के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को जगा रहे थे और भारतीय पहचान को दुनिया के सामने प्रस्तुत कर रहे थे।

डिजिटल युग का आविर्भाव और चित्रकला पर इसका प्रभाव – भारतीय

चित्रकला परंपरा में डिजिटल क्रांति ने कला परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया है, जहाँ पारंपरिक कला रूपों का डिजिटल नवाचारों के साथ संलयन हो रहा है। इस क्रांति ने भारतीय कला को नया जीवन दिया है, उसे व्यापक दर्शकों तक पहुंचाया है और कलाकारों के लिए रचनात्मक संभावनाओं का विस्तार किया है। 21वीं सदी के दूसरे दशक में सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति ने कला संसार को पूरी तरह बदल दिया। स्मार्टफोन, टैबलेट, स्टाइलस पेन, उच्च-गुणवत्ता वाले डिजिटल डिस्प्ले और विभिन्न कला **सॉफ्टवेयर (एडोब प्रोक्रिएट, फोटोशॉप, कोरल पेंटर, क्लिप स्टूडियो पेंट)** आदि ने कला के माध्यमों को पूरी तरह से बदल दिया। ये तकनीकें पहले तो पश्चिमी देशों में लोकप्रिय हुईं, लेकिन धीरे-धीरे एशिया और विशेषकर भारत में भी इनका प्रसार हुआ। डिजिटल चित्रकला के कई महत्वपूर्ण लाभ हैं जो इसे परंपरागत माध्यमों से अलग करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि डिजिटल माध्यम में तत्काल सुधार और परिवर्तन संभव है। यदि कलाकार को किसी रंग, आकार या विस्तार पर कोई आपत्ति हो, तो वह तुरंत '**अंडु**' बटन दबाकर अपने काम को ठीक कर सकता है। यह परंपरागत कला माध्यमों में संभव नहीं है। डिजिटल माध्यम में रंगों की विविधता असीमित है। देश-विदेश में उपलब्ध 16 मिलियन रंगों से लेकर विभिन्न ग्रेडिएंट्स तक सब कुछ उपलब्ध है।

इसके अलावा, डिजिटल कला के लिए आवश्यक उपकरणों की लागत परंपरागत कला सामग्री की तुलना में कहीं कम है। एक अच्छा टैबलेट खरीदने के बाद कलाकार को बारम्बार खर्च नहीं करना पड़ता। डिजिटल माध्यम पर्यावरण के अनुकूल भी है क्योंकि इसमें रसायनिक रंगों, विषाक्त पदार्थों या अन्य प्रदूषणकारी सामग्रियों का कोई उपयोग नहीं होता। कलाकार जितनी चाहे उतनी प्रतियां बना सकता है और उन्हें विश्वभर में तुरंत भेज सकता है। यह वैश्विक बाजार तक पहुँचना आसान बनाता है और कलाकार को सीधे ग्राहकों से संपर्क स्थापित करने का अवसर देता है।

किंतु **परंपरागत कला** के समर्थक और विशेषज्ञ यह मानते हैं कि हाथ से बनाई गई कला में एक आत्मा होती है जो डिजिटल कला में नहीं हो सकती। तेल के रंग, जलरंग, स्याही, कागज, कैनवास और अन्य भौतिक सामग्रियों के साथ सीधा संपर्क कलाकार को एक विशेष आध्यात्मिक और भावनात्मक अनुभव देता है। दूसरा, परंपरागत कला की कृतियां भौतिक वस्तुएं होती हैं जिनका एक विशेष मूल्य और स्थायित्व होता है, जबकि डिजिटल कला केवल डेटा है। इन कारणों से आज भी दुनियाभर में परंपरागत कला माध्यम प्रासंगिक और मूल्यवान माने जाते हैं।

डिजिटल क्रांति का प्रभाव

अभिव्यक्ति का नया माध्यम – कलाकार अब पारंपरिक तकनीकों (जैसे तैल, जल रंग) के साथ-साथ डिजिटल उपकरणों (ग्राफिक्स टैबलेट, सॉफ्टवेयर) का उपयोग कर रहे हैं। यह संलयन उन्हें पारंपरिक सौंदर्यशास्त्र को बनाए रखते हुए नए और अभिनव कलाकृतियाँ बनाने की अनुमति देता है।

वैश्विक पहुंच और विपणन – ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ई-कॉमर्स वेबसाइटों ने पारंपरिक कारीगरों और कलाकारों को बिचौलियों के बिना वैश्विक दर्शकों तक सीधे पहुंचने में मदद की है। इससे उनकी दृश्यता बढ़ी है और बिक्री में वृद्धि हुई है, जिससे ग्रामीण कारीगरों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आया है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण – डिजिटल तकनीकें सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अजंता की गुफाओं के भित्ति चित्रों जैसे प्राचीन कार्यों को फोटोग्राफी और **ए आई** नैनो टेक्नोलॉजीज के माध्यम से डिजिटाइज किया जा रहा है। साथ ही, ऑनलाइन कला बहाली तकनीक क्षतिग्रस्त कलाकृतियों को दूर से बहाल करने में मदद कर रही है।

कोविड-19 महामारी : डिजिटल कला को अपनाने का क्रांतिकारी क्षण – 2020 की शुरुआत में जब कोविड-19 महामारी ने विश्व को अपनी आगोश में ले लिया, तो संपूर्ण कला और संस्कृति जगत को एक भारी झटका लगा। कला दीर्घाएं, संग्रहालय, प्रदर्शनी हॉल और कला विद्यालय सभी बंद कर दिए गए। कलाकार अपनी कृतियां प्रदर्शित नहीं कर सकते थे और

ग्राहकों से सीधे संपर्क नहीं रख सकते थे। इस संकट के समय भारतीय कलाकारों को डिजिटल माध्यमों की ओर मुड़ना पड़ा। यह परिवर्तन अचानक नहीं बल्कि क्रमिक था, शुरुआत में तो कलाकार केवल अपनी पारंपरिक कृतियों की तस्वीरें लेकर सोशल मीडिया पर साझा करते थे किंतु धीरे-धीरे उन्होंने महसूस किया कि डिजिटल माध्यम में न केवल परंपरागत कला को संरक्षित किया जा सकता है, बल्कि नए तरीकों से कला का सृजन भी किया जा सकता है।

फलस्वरूप, भारतीय कलाकारों का एक नया वर्ग उभरा जो पूरी तरह से डिजिटल माध्यम में काम करने लगा। भारतीय कलाकारों ने टैबलेट और स्टाइलस पेन का उपयोग करके डिजिटल पेंटिंग शुरू की। वे विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स जैसे **इंस्टाग्राम**, **फेसबुक, यूट्यूब** और **पिंटरेस्ट** इत्यादि पर अपनी कला को साझा करने लगे। इन प्लेटफॉर्म्स ने कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने का अवसर प्रदान किया। कुछ कलाकारों ने अपनी कला बनाने की प्रक्रिया को वीडियो के रूप में यूट्यूब पर अपलोड किया, जिससे लाखों दर्शक उन्हें देख सकते थे। महामारी के इस दौरान भारत सरकार ने भी डिजिटल माध्यमों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू कीं। राष्ट्रीय कला केंद्र (राष्ट्रीय प्रदर्शन कला केंद्र) ने वर्चुअल प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए) ने अपनी कृतियों को ऑनलाइन संग्रह के रूप में उपलब्ध कराया। यह एक ऐतिहासिक क्षण था जब भारतीय संस्कृति और कला को डिजिटल माध्यम में स्वीकार किया गया।

परंपरागत विषयों का डिजिटल रूपांतर और सांस्कृतिक संरक्षण – भारतीय डिजिटल कलाकारों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे परंपरागत विषयों को आधुनिक और समसामयिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहे हैं।

राधा-कृष्ण, देवी-देवता, रामायण-महाभारत के पात्र, भारतीय लोकजीवन, धार्मिक प्रतीक और सांस्कृतिक मूल्य, ये सभी डिजिटल कला में नए और सजीव रूप में आविर्भूत हो रहे हैं। यह केवल कला का माध्यम बदलना नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक सचेतन प्रयास है। उदाहरण के लिए, कलाकार देवदत्ता पद्हणपट्टन और अन्य युवा प्रतिभाओं ने देवी दुर्गा, सीता, द्रौपदी और अन्य महिला पात्रों को समकालीन संदर्भ में चित्रित किया है। उनके चित्रों में ये देवियां न केवल धार्मिक प्रतीक हैं, बल्कि आधुनिक नारी शक्ति, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का भी प्रतीक हैं। ये चित्र पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में फिर से परिभाषित करते हैं।

अन्य कलाकारों ने भारतीय लोक कलाओं, जैसे मिथिला पेंटिंग, पट्टचित्र, वरली आर्ट और अन्य क्षेत्रीय शैलियों को डिजिटल रूप में पुनर्सृजित किया है। ये चित्र लोक परंपरा की सरलता, प्रामाणिकता और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित रखते हैं, साथ ही आधुनिक दर्शकों को भी आकर्षित करते हैं। उदाहरण के लिए, कलाकार अनिकेत जोशी ने मिथिला पेंटिंग की परंपरागत शैली को डिजिटल माध्यम में अनुकूलित किया है और अब लाखों दर्शक उनकी कृतियों को सोशल मीडिया पर देखते हैं। डिजिटल माध्यम ने कलाकारों को परंपरागत विषयों पर नई व्याख्याएं करने की स्वतंत्रता दी है। वे अब अपने परिवार की कहानियों, समाज की समस्याओं, और समकालीन मुद्दों को भारतीय कला के संदर्भ में चित्रित कर सकते हैं। यह डिजिटल कला को केवल एक तकनीकी माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद का एक महत्वपूर्ण साधन बनाता है। भारतीय चित्रकला की परंपरा को संरक्षित करने के लिए डिजिटल माध्यम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संग्रहालयों और निजी संग्राहकों ने पारंपरिक कृतियों को स्कैन करके डिजिटल संग्रह बनाए हैं। इससे ये कृतियां भौतिक नुकसान से सुरक्षित रहती हैं और साथ ही वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ भी हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्रों को 3डी स्कैनिंग तकनीक से डिजिटाइज किया गया है, जिससे वे वर्चुअली पूरी दुनिया में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि भारतीय पारम्परिक चित्रण प्रणाली ने समसामयिक परिवेश की नवीन सम्भावनाओ और तकनीकों को स्वीकारते हुए कला के नूतन आयामों को पुष्पित करने को अग्रसर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बनर्जी, पी. (2015). 'भारतीय चित्रकला का विकास : प्राचीन काल से आधुनिक काल तक' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
2. क्रिल, आर. और जारीवाला, के. (2018). 'मुगल पांडुलिपि : कला, संस्कृति और साम्राज्य' द मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट बुलेटिन, खंड 45, पृष्ठ 78-95.
3. हैवेल, ई. बी. (1920). 'भारतीय कला के आदर्श' डोवर प्रकाशन।
4. मिटर, पी. (2001). 'भारतीय कला' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. नंदिनी, एस. और कुमार, आर. (2022). 'भारतीय समकालीन कला में डिजिटल क्रांति : सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन।' समकालीन भारतीय संस्कृति त्रैमासिकी, खंड 18, संख्या 2, पृष्ठ 112-138.
6. शर्मा, के. (2020). 'कोविड-19 महामारी का भारतीय कला और संस्कृति पर प्रभाव।' सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, खंड 15, संख्या 3, पृष्ठ 45-67.
7. सिवरामामूर्ति, सी. (1974). 'भारत की कला' राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।
8. वर्मा, बी. (2023). 'डिजिटल कला और सांस्कृतिक संरक्षण : भारतीय अनुभव।' अंतर्राष्ट्रीय डिजिटल संस्कृति और इलेक्ट्रॉनिक पर्यटन पत्रिका, खंड 5, संख्या 1, पृष्ठ 89-112.

9. यूनेस्को (2019). 'अजंता गुफाएं : विश्व धरोहर दस्तावेज।' यूनेस्को डिजिटल आर्काइव्स, पेरिस।
10. यादव, एम. और पटेल, एस. (2021). 'समकालीन भारतीय कलाकारों के लिए सोशल मीडिया एक मंच के रूप में : केस स्टडी विश्लेषण।' दक्षिण एशियाई कला और डिजाइन पत्रिका, खंड 12, संख्या 4, पृष्ठ 156–178.
11. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय (2022). 'कलाओं के प्रचार के लिए डिजिटल पहल: वार्षिक रिपोर्ट 2022' प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
12. राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा (2023). 'ऑनलाइन संग्रह और वर्चुअल प्रदर्शनियां : वार्षिक रिपोर्ट।' एनजीएमए, नई दिल्ली।
13. ठाकुर, अवनींद्रनाथ (1988). 'भारतीय कला का इतिहास।' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

****